[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3478

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

"संगीत एवं समाज"

डॉ.गीता मिश्रा
प्राध्यापक संगीत
माता जीजाबाई शासकीय कन्या महाविद्यालय, मेतीतबेला, इन्दौर

''संगीत'' सृष्टि की अनुपम कृति है,जो चराचर जगत में मानव के चेतन मन की संवेदनाओं को संचारित करके असीम आनंद की अनुभूति कराती है।

संगीत में नवाचार मन के संवेग का संचरण है,जो वातावरण से प्रभावित होता है। सृष्टि की रचना एवं विकास के साथ साथ ही मानव मन की तीव्र संवेदनशील भावनाओं की अभिव्यक्ति का संचार नाद(संगीत) के रूप में हुआ। ब्रह्म स्वरूप "नाद" ने वेद ज्ञान को सामगान से आलोकित करके मानव मन को देवत्व के शिखर पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रकृति में नवाचार की क्रिया निरंतर प्रवाहित होती रहती है। ऋषि मुनियों ने नवाचार से मानव को कर्म,साधना का ज्ञान कराया,तथा सुनियोजित एवं संगठित समाज की रचना का मार्ग प्रशस्त किया था। वही मार्ग आज तक सनातन संस्कृति का आधार स्तम्भ ज्ञान,दर्शन अध्यात्म,साहित्य कला एवं संगीत निरंतर विकास की अविरल धारा में प्रवाहित हो रहा है।

व्यक्ति की क्रियाओं का संकलन एवं विचारों एवं भावनाओं का प्रस्फुटित होकर विस्तारित होना ही सामूहिक चेतना की आवश्यकता का बल प्रदान करता है,जो व्यक्ति समूह को आकार देता है,वही समाज रूप में स्थापित होता है। क्योंकि व्यक्ति का अस्तित्व समाज में स्थित मान्यताओं में है।समाज एक समूह की व्यवस्था को कुछ नियमों के आधार पर मान्यता देता है।

समाज व्यवस्था पर भोगोलिक,ऐतिहासिक,सांस्कृतिक,राजनैतिक,आर्थिक एवं भाषाई कारकों का प्रभाव पड़ता है। भारतीय समाज व्यवस्था अति प्राचीन है, इसमें धर्म,कर्म एवं पुनर्जन्म जैसी मान्यताओं को शास्त्रीय आधार बनाया गया है।

विभिन्न भू भागों में रहने वाले लोगों में अपनी भिन्न भिन्न भौगोलिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण अलग–अलग प्रकार की संस्कृति एवं समाज को जन्म दिया।

भारत की सामाजिक व्यवस्था अनूठी एवं मौलिक है,जो वेद,पुराण,उपनिषद् से प्रेरणा लेकर बनी है।विश्व में मिस्त्र,अलीरिया, यूनान, रोम,वैवीलोनिया जो प्राचीन सभ्यताएं मानी जाती हैं। समय के साथ छिन्न–भिन्न हो गई है,उनके मात्र अवशेष बचे हैं। इनके धर्मो का कोई अनुयायी भी नही बचा है,इसीलिये उनके विचारों से कोई प्रेरित नही होता है।किन्तु भारतीय समाज व्यवस्था अभी जीवित है, इसकी सनातन संस्कृति के प्रेरक सिद्धान्त आज भी विश्व धरातल में प्रचारित होकर अपनाये जा रहे है।

समाज के सभी कर्म संस्कारों में संगीत को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।संगीत मानव ह्रदय के भावों उद्दीपित करके आकर्षित एवं आनंदित करता है।

संगीत में आध्यात्मिक बल होने से इसे शाश्वत माना जाता है।संगीत मनीषियों ने संगीत को धरोहर मानकर उसके मूल स्वरूप को बनाये रखते हुए उसमें नित नये आयामों को समाहित किया है।

समय गतिमान है,प्रकृति निरंतर परिवर्तनशील है। प्रतिक्षण भौगोलिक परिवर्तन होना प्राकृतिक धर्म है,जिसका नियंत्रण किसी परम शक्ति द्वारा नियंत्रित है।मनुष्य नियति के आधीन है,फिर भी अपनी चेतनावस्था से क्रियाशील होकर प्रकृति के होने वाले परिवर्तनों से जूझते हुए उत्थान फिर पतन पुनः उत्थान की गति प्राप्त करता है।समाज पर इसका प्रभाव पडता है। मनुष्य के विचारों,विश्वासों तथा व्यवहार के तरीकों का ज्ञान,विभिन्न उपकरणों तथा उपयोग में लाये जाने वाले वस्तुओं में होने वाले परिवर्तनों को ही सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

प्रसिद्ध समाज शास्त्री सारोविन ने अपनी पुस्तक''सोशल एण्ड कल्चरल डायनामिक्स'' में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की चर्चा भिन्न प्रकार से की है।उन्होंने स्पष्ट किया है,कि समाज परस्पर क्रिया करते हुए बहुत से व्यक्तियों की संपूर्णता है।परस्पर क्रिया करने वाले चेतन या अचेतन गतिविधियों द्वारा कार्य का निर्माण अथवा संशोधन होता है।समाज में संगठन विघटन और पुनर्गठन के रूप में जो उतार चढ़ाव होता रहता है,उसी को हम सामाजिक परिवर्तन कहते है।

सारोकिन के ध्रुवीकरण के सिद्धान्त के अनुसार सामान्य जीवन में लोगों में अपने सामाजिक मानदण्डो को उलंघन करने की प्रवृति होती है।यद्यपि समाज द्वारा उसमें अंकुश लगाया जाता है।इसके उपरान्त भी उनमें भी सुखकारी स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति विकसित होने लगती है।इसमें बहुत कम व्यक्ति ही धार्मिक,नैतिक,परोपकारी विचारों को महत्व देते हैं।इसमें समाज विघटित होता है।समाज की दशा अनियंत्रित हो जाती है,परिणाम स्वरूप समाज का पतन हो जाता है।समयोपरान्त व्यक्तियों को अपनी भूलो का ज्ञान होकर पश्चाताप होता है।वे पुनः अपने पुराने कलेवर को प्राप्त करने हेतु अथक प्रयत्न करके लौटते है,इसी अवस्था को ध्रुवीकरण का सिद्धान्त कहते हैं। इसमें भौतिकवादी विचार,भावनात्मक विचार,आदर्शवादी विचाारों का उतार चढ़ाव होता है।उसी को हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।

सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव से संगीत में परिवर्तन होना स्वभाविक है।वैदिक काल से महाभारत काल तक की राजा–प्रजा सदा आध्यात्मिक ज्ञान से ओत प्रोत ईश्वर चिंतन के आधार पर संगीत को स्थान देते थे।महाभारत काल के पश्चात् समाज की व्यवस्था में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ। राज्यों की व्यवस्था अनियंत्रित हो गई–धर्म ज्ञान संगीत सभी पर उसका प्रभाव पडा।ि वदेशी प्रभाव का भाषा एवं संगीत,साहित्य परम्परा से विलग सा हो गया,नई व्यवस्था अनुसार सामाजिक नियमों में विसंगति होने लगी जो वर्तमान काल तक देखा जा सकता है।संस्कृत भाषा प्रभाव हीन होने से अन्य विदेशी भाषा के प्रभाव से संगीत में भी विभिन्न शैलियों का जन्म हुआ।

ईश्वरोपासना का प्रमुख साधन संगीत,मानव का मनोरंजन,एवं विलासिता का प्रमुख साधन बन गया।मुगल काल इसका उदाहरण है।

नवाचार के परिणाम स्वरूप आज का शास्त्रीय संगीत पूर्व के लोग संगीत के क्रमशः विकास का परिणाम है।समाज के साथ प्रयोग रूप में ध्रुपद,प्रबंध के बाद ख्याल, ठुमरी,टप्पा,दादरा,गीत,भजन,गजल आदि शैलियों को अपनाया गया। वर्तमान में सिनेमा संगीत जन जन में व्याप्त हो गया है।

आधुनिक काल पूर्णतः यांत्रिक है।जीवन की व्यस्ततम घड़ियों मे से समय निकालकर व्यक्ति कम समय में ही अपना मनोरंजन करना चाहता है।भौतिक विलासिता से लिप्त युवाओं ने समाज की दिशा ही बदल दी है। समाज में रहन सहन,खानपान,एवं मनोरंजन सभी विश्वव्यापी आदान–प्रदान से प्रभावित हो रहा है।समाज एवं संगीत को नवाचार से प्रभावित होना आवश्यक हो गया है।

संगीत में मूर्धन्य कलाकारों द्वारा किये गये प्रयोगों को अपनाया गया है,जैसे उस्ताद अलाउद्दीन खाँ द्वारा नये वाद्य यंत्रो का निर्माण–चंद्रसारंग,जलतरंग। पं.रविशंकर ने सितार को वीणा के स्वरूप में खड़ज पंचम के तार का प्रयोग किया इसी प्रकार वायलिन एवं गिटार में तरब के तारों का प्रयोग। पं.कुमार गंधर्व द्वारा गायन शैली में लोक गीत शैली का समावेश,पं.भीमसेन जोशी द्वारा भजनों को पूर्ण शास्त्रीयता के साथ प्रस्तुत करना आदि।उस्ताद जाकिर हुसैन खाँ ने तबला में विदेशी ताल ड्रम के साथ फयूजन के नये नये प्रयोग किये है।

सिनेमा संगीत में पं.शिवकुमार शर्मा एवं हरिप्रसाद चौरसिया ने शास्त्रीयता के साथ लोक संगीत के नये प्रयोग किये।आज संगीत में नृत्य में प्रकारों में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं।

सिनेमा के संगीत में नवाचार से विश्व की संगीत शैलियों का प्रभाव एवं विभिन्न लोक शैलियों का मिलाकर गायन एवं वादन को सामूहिक नृत्य के आश्रित बना दिया है जिससे उनमे मौलिक प्रभाव पर विपरीत असर पड़ रहा है।संगीत नृत्य को संवारने में लगा दिया जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वैसे समाज के प्रत्येक सदस्य का मनोनुकूल–मनोरंजन हो रहा है।संगीत का प्रचार–प्रसार एवं व्यवसाय सारे विश्व में फलफूल रहा है।फिर भी उसमें भविष्य की अनेक संभावनाएं निहित है।आज संगीत में नवाचार द्वारा पुनः मूल स्वरूप लाना है,तो संगीत शिक्षण संस्थानों को प्रयत्न करना होगा।युवाओं में संगीत प्रति लगाव विश्वास जगाने हेतु संगीत अध्येताओं को त्याग एवं परिश्रम करना होगा।तभी संगीत स्तरीय परिणाम देने में सक्षम होगा।

घराने का संगीत कुछ गिने चुने हाथों में संचालित हो रहा है,जो इतने बड़े समाज की आवश्यकता के लिए पर्याप्त नही माना जायगा।इसके विस्तारकी नितांत आवश्यकता है।

संदर्भ –

1 *संगीत पत्रिका– हाथरस*
2 *समाजशास्त्र– जी.के.अग्रवाल*
3 *भारतीय समाज तथा संस्कृति– गुप्ता एवं शर्मा*